

# पन्नगेन्द्र शयन

रागमलिका ताळम्: रूपकम्

(श्री स्वाति तिरुनाळ् विरचित)

पल्लवि

रागं शङ्कराभरणं

पन्नगेन्द्रशयन श्रीपद्मनाभ मुदा काम-  
सन्नमानसं मामव सारसायतलोचन ॥

चरणानि

रागं काम्भोजि

मन्दमारुतोपि मम मानसं विवशयति  
कुन्दकुङ्कुळरदन कोपमाशु जहि मयि ॥ १ ॥

रागं नीलाम्बरि

कोकिलशुकादि मञ्जुकूजितमपि मे हन्त  
पाकशासनविनुत भाति घोरतममये ॥ २ ॥

रागं भैरवि

मानिनीजनहसितां मा कुरि मामनन्येशां  
सूनसायकसदृशशोभनाङ्ग दयापर ॥ ३ ॥

रागं तोडि

यामिनीसंवेशेषु त्वाम् काममवलोकयामि  
कोमळाङ्ग विगळितघोरतापा क्षणं तदानीम् ॥ ४ ॥

## रागं सुरटि

पाटलबिम्बसदृशपावनविमलाधर  
हाटकोपमवसन हारशोभितकन्धर ॥ ५ ॥

## रागं नाथनामक्रिय

देव देव कृपया मे देहि बाहुनिपीडनं  
भावयामि भवदीयापाङ्गलीलां रमावर ॥ ६ ॥

## रागं भूपाळं

मोदयामि जगदीश मोहन कामकेळिषु  
सादरमर्थये नाथ सामजवरगमन ॥ ७ ॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠